सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेलः **tameer1963@gmail.com** पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

सितम्बर, 2019 वर्ष 18 अंक 07

मुहर्रम

हम्द ख़ुदा की शुक्र ख़ुदा का माहे मुहर्रम आया है
हिजरी सन का पहला महीना यानी मुहर्रम आया है
दसवीं मुहर्रम आशूरा दिन बड़ी ही बरकत वाला है
मोमिन इस दिन रोज़ा रखें नबी ने ये फरमाया है
आशूरा का रोज़ा रखना प्यारे नबी की सुन्नत है
इक दिन उसके साथ मिलाना गैर मुअक्किदा सुन्नत है
इस बरकत वाले दिन ही में इक हुआ हादसा बहुत बड़ा
ज़ुल्म व सितम का एक पहाड़ आले नबी पर टूट पड़ा
जांबाज़ों के साथ हुसैन कर्बला में शहीद हुए
जिन्होंने उनको किया शहीद सबके सब वह पलीद हुए
शोहदा के हमराह हुसैन जन्नत में वह ज़िन्दा हैं
जिन्होंने उनको किया शहीद क़ब्र में अपनी मुर्दा हैं
जन्नत में होंगे सरदार दोनों भाई हसन हुसैन
दोज़ख़ में जो क़ातिल उनके रहेंगे वह हरदम बेचैन
रहमत लाखों नबी पे या रब और करोड़ों उनपे सलाम
आल और अस्हाबे नबी पर रहमत या रब रहे मुदाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
मुहर्रमुल–हराम	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	14
मानव अधिकार दिवस	मौ0 सै0 मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	23
सांसारिक जीवन की वास्तविकता	डॉ0 मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	26
ज़बान की असावधानी	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	29
मज़हब और सदाचरण	मौ0 सै0 मु0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	32
हज़रत मुहम्मद सल्ल0	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	36
मनजूम अक़ायद (पद्य)	इदारा	39
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अनआमः

अनुवाद–

गैब (परोक्ष) की कुंजियां उसी के पास हैं वही उनको जानता है ख़ुश्की (थल) और तरी (जल) में जो कुछ है उससे वह अवगत है जो पत्ता भी गिरता है उसको भी वह जानता है और धरती के अंधेरों में जो दाना है और जो भी सूखा और गीला है वह सब खुली किताब में मौजूद है[1](59) और वही है जो रात को तुम्हें मौत दे देता है और तुम दिन में जो काम काज करते हो उसको भी वह जानता है फिर वह दिन में तुम्हें उठा देता है ताकि निर्धारित अवधि पूरी हो[2] फिर उसी की ओर तुम्हें लौट कर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या करते रहे थे(60) और वही अपने बन्दों पर ज़ोर रखने वाला है और वह तुम पर रक्षा के फरिश्ते भेजता है यहां तक कि जब मौत का समय आ पहुंचता है तो हमारे दूत उसको मौत दे देते हैं और वे थोड़ी भी कोताही नहीं करते(61) फिर वह अपने वास्तविक मालिक अल्लाह की ओर लौट जाएंगे, अच्छी तरह जान लो कि सरकार उसी की है और वह बहुत जल्द हिसाब चुका देने वाला है(62) पूछिए कि खुश्की और तरी के अंधेरों से तुम्हें कौन छुटकारा देता है, उसी को तुम गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके पुकारते हो कि अगर उसने हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर एहसान मानेंगे(63) कह दीजिए कि अल्लाह तो तुम्हें इससे भी बचाता है और हर तकलीफ़ से बचाता है फिर भी तुम शिर्क (बहुदेववाद) करते हो[3] कह दीजिए कि वह तो सामर्थ्य रखता है कि तुम पर ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से अजाब भेज दे या तुम्हें गिरोह में करके भिड़ा दे और एक को दूसरे से लड़ाई का मज़ा चखा दे, देखिए कि हम आयतों को किस तरह अलग अलग शैली में बयान करते हैं कि शायद वे समझ लें[4](65) और आपकी कौम ने इस कुर्आन को झूठ बताया जब कि वह सत्य है कह दीजिए कि मैं तुम पर दारोग़ा तो नहीं हूँ(66) हर चीज़ का एक निर्धारित समय है और आगे जल्द ही तुम्हें पता चल जाएगा[5](67) और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों के बारे में

बेहूदा बकते हैं तो आप उनसे अलग हो जाएं यहां तक कि वे दूसरी बातें करने लगें और अगर शैतान आपको भुला ही दे तो याद आने के बाद फिर अत्याचारी लोगों के पास मत बैठें[6] (68) और परहेज़गारों (संयमी लोगों) के जिम्मे उनका कुछ भी हिसाब नहीं हां याद दिला देना ताकि शायद वे भी परहेज़गार बन जाएं[7] (69) और उन लोगों को छोड़ दीजिए जिन्होंने अपने दीन (धर्म) को खेल तमाशा बना लिया है और दुन्या के जीवन ने उनको धोखे में डाल रखा है और इस क़ुर्आन से नसीहत करते रहिए ताकि कोई अपने किए में फंस ही न जाए कि अल्लाह के सिवा न उसका कोई समर्थक होगा न सिफारिशी और वह पूरा का पूरा फिदिया देना भी चाहे तो लिया न जाएगा, वे लोग तो अपने किए में फंस ही चुके, उनके लिए खौलता पानी है और दुखद अज़ाब है इसलिए कि वे इनकार करते रहे हैं (70) कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह को छोड़ कर उसको पुकारें जो न हमारे लाभ का न घाटे का और जबकि अल्लाह ने हमें राह दी, उसके बाद हम उलटे फिरें, जैसे किसी को शैतान ने ज़मीन में भटका दिया हो और वह हैरान हो और उसके साथी उसको रास्ते पर आने के लिए आवाज़ दे रहे हों कि हमारे पास आ जाओ, बता दीजिए कि अल्लाह की बताई राह ही असल राह है, हमें तो यही आदेश है कि हम संसारों के पालनहार के लिए आज्ञाकारी रहें[8] (71) और यह कि नमाज़ कायम रखो और उसी से डरते रहो, वही है जिसके पास तुम इकट्ठा किए जाओगे (72) और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को ठीक ठीक बनाया और जिस दिन वह कहेगा हो जा बस वह हो जाएगा।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यानी लौहे महफ़ूज़ (ईश्वरीय ज्ञान) गैब परोक्ष की कुंजियां केवल अल्लाह के पास हैं, वही उसमें से जितना चाहे जिस पर खोल दे, किसी को ताकत नहीं कि वह उपकरणों द्वारा परोक्ष के ज्ञान तक पहुंच सके।

2. वह चाहता तो तुम सोते ही रह जाते लेकिन मौत का निर्धारित समय आने से पहले वह हर नींद के बाद तुम्हें जगाता है यह नींद भी वास्तव में एक प्रकार की मृत्यु है अन्तर यह है कि नींद की हालत में शरीर का आत्मा से संबंध बना रहता है और मृत्यु से आत्मा का शरीर से हर प्रकार का संबंध समाप्त हो जाता है।

3. मुसीबत में फंसते हो तो उसी को पुकारते हो जब नजात मिल जाती है और राहत व आराम हासिल हो जाता है तो फिर सब भूल जाते हो।

शेष पृष्ठ ......31...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

धन दौलत को शरीअ़त के खिलाफ बर्बाद करने की मुमानियतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिए तीन कामों को पसंद फरमाता है और तीन को ना पसंद फरमाता है, पसंद यह हैं कि तुम उसकी इबादत करो, उसका शरीक न ठहराओ, और उसकी रस्सी सब मिल कर मज़बूत पकड़ लो, और कील—काल (बहस मुबाहसा) को, ज़ियादा सवाल जवाब करने को, और माल बर्बाद करने को ना पसंद फरमाता है। (मुस्लिम)

हज़रत मुगीरा के कातिब बर्राद से रिवायत है कि मुगीरा बिन शोबा रज़ि0 ने हज़रत मुआविया रज़ि0 को मुझ से खत लिखवाया कि नबी सल्ल0 हर फर्ज नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ते थे।

अनुवादः— *नहीं कोई माबूद सिवाय अल्लाह के, और उसका कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है, और उसी की सारी तारीफें हैं और वही हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ अल्लाह कोई आपको रोकने वाला नहीं जो आप किसी को देना चाहें और कोई किसी को देने वाला नहीं जिसे आप देना न चाहें और उसके साथ यह भी लिखवाया, कि नबी सल्ल0 ने कील काल (कटहुज्जती) ज़ियादा प्रश्न उत्तर और माल बर्बाद करने, मां बाप की नाफ़रमानी करने, जिंदा लड़की को दफन करने, और जिसको देना वाजिब है उसको न देने से और जो हक न हो उसके लेने से मना फरमाया है।*

(बुखारी—मुस्लिम)

तीर व तलवार से इशारा करने की मुमानियतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि कोई अपने भाई की ओर तलवार से इशारा न करे, क्या मालूम कि शैतान तुम्हारे इन हाथों से फितना पैदा कर दे और तुम उसकी बदौलत दोज़ख़ के गढ़ढे में गिर जाओ।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

मुस्लिम शरीफ की एक रिवायत में है कि अबुल कासिम सल्ल0 ने फरमाया जो शख्स अपने मुसलमान भाई की ओर किसी तेज चीज़ से इशारा करे तो उस पर फरिश्ते लानत करते हैं अगरचे उसका हकीकी भाई ही हो।

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल0 ने नंगी तलवार हाथ में लेने से मना फरमाया है।

(अबू दाऊद तिर्मिजी)

अज़ान सुन कर बिना उज़्र फर्ज नमाज़ पढ़े बगैर जाने की मुमानियतः–

हज़रत अबू शअसा रज़ि0 से रिवायत है कि हम मस्जिद में अबू हुरैरा रज़ि0 के पास बैठे थे कि मुवज्जिन ने अज़ान कही, उसी समय एक शख्स जाने के इरादे से

शेष पृष्ठ .....22...पर

मुहर्रमुल–हराम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मुहर्रम महीने का नाम है अल–हराम उसका गुणवाचक शब्द है जिस का अर्थ है सम्मानित अथवा प्रतिष्ठित, दोनों शब्द मिलाने से उसका इम्ला बन गया। मुहर्रमुल हराम अर्थात प्रतिष्ठित अथवा सम्मानित मुहर्रम, वैसे साधारणतः केवल मुहर्रम बोला जाता है। पवित्र कुर्आन में आया है कि साल के 12 महीनें हैं उनमें से चार सम्मानित हैं, हदीस में उन चार महीनों के नाम यह है— मुहर्रम, रजब, ज़ीक़अ़दह और जिलहिज्जा इस शुभ महीने में अल्लाह तआला ने अपने मुख्य बन्दों अर्थात नबियों और रसूलों पर बड़ी प्रमुख कृपाएं की हैं, हजरत आदम अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और कई अल्लाह के नबियों और रसूलों पर विशेष कृपाओं का उतारना रिवायतों में मिलता है, सबसे प्रसिद्ध घटना, हज़रत मूसा अलैहिस्सलमा की हैः—

जब प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के आदेश से मक्का मुकर्रमा से हिज़रत करके मदीना मुनव्वरा गये और वहीं का निवास गृहण कर लिया तो देखा कि यहां के यहूदी 10 मुहर्रम को रोज़ा रखते हैं। यहूदियों से पूछा कि तुम लोग दस मुहर्रम को रोज़ा क्यों रखते हो तो उन्होंने बताया कि इस रोज़ अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को समुद्र में मार्ग दे कर उनको फिरऔ़न के अत्याचार से बचा लिया था और फिरऔन को उसी समुद्र में डुबो दिया था। हम लोग अल्लाह की इस अदभुत कृपा पर जो हमारे नबी हज़रत मूसा पर हुई अल्लाह के शुक्रिये में रोज़ा रखते हैं, प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हमारा हज़रत मूसा अलै0 पर यहूदियों से ज़ियादा हक़ है, हम भी इस रोज़ रोज़ा रखेंगे, अतएव प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं दस मुहर्रम को रोज़ा रखा और सहाबा को भी उस रोज़ रोज़ा रखने का आदेश दिया। अतएव सहाबा दस मुहर्रम को बड़े एहतिमाम से रोज़ा रखते थे और अपने बच्चों से भी रखवाते थे।

दस मुहर्रम को आशूरा का दिन कहलाता है बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि हिजरत से पहले भी कुरैश इस दिन रोज़ा रखते थे। बाज़ रिवायात से ज्ञात होता है कि रमज़ान के रोज़े फर्ज़ होने से पहले आशूरा का रोज़ा फर्ज़ था जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए तो आशूरा का रोज़ा सुन्नत हो गया।

प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा केवल दस मुहर्रम का एक रोज़ा रखते थे, कि एक बार अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हम यहूद के रोज़ों से अन्तर करने के लिए दस के साथ नौ या ग्यारह का रोज़ा मिला कर रखा करेंगे, परन्तु यह फरमाने के पश्चात आप को अगला मुहर्रम न मिल सका लेकिन सहाबा ने उस पर अमल आरम्भ कर दिया और दस मुहर्रम के साथ एक दिन मिला कर रोज़ा रखने लगे, और इसी आधार पर उलमा ने केवल दस मुहर्रम का रोज़ा रखने को मकरूह कहा अतः तमाम मुसलामन इस पर अमल करने वाले अर्थात दस के साथ नौ या ग्यारह को मिला कर रोज़ा रखने लगे।

लेकिन अब इक्सीस्वीं सदी में उलमा का कहना है कि नौ या ग्यारह मुहर्रम का रोज़ा यहूद की मुखालफत के लिए बढ़ाया गया था परन्तु अब तो यहूद न तो दस मुहर्रम का रोज़ा रखते हैं और न ही उनके कलेण्डर में मुहर्रम महीने का उल्लेख है अतः अब केवल दस मुहर्रम को रोज़ा रखना मकरूह न रहा, हम मुसलमानों को चाहिए कि दस मुहर्रम का मस्नून रोजा रख कर सवाब हासिल करें और कोशिश करें कि उसके साथ एक दिन और मिला कर दो रोज़ों का सवाब हासिल करें।

बाज़ ज़ईफ रिवायतों से आशूरा के दिन अपने घर वालों पर अच्छे खाने पीने का प्रबन्ध करने पर सवाब बताया है परन्तु उन रिवायतों का कमज़ोर होना इस से और स्पष्ट हो जाता है कि जब उस दिन रोज़ा रखना सुन्नत है तो खाने की वुसअ़त का क्या मतलब होगा? अलबत्ता आशूरा की रात सहरी का अच्छा प्रबन्ध कर के सवाब लिया जा सकता है।

मुहर्रम के महीने का सम्मान इस से भी सिद्ध होता है कि यह हिजरी कैलेण्डर का पहला महीना है। बहर हाल मुह़र्रम बड़ा ही प्रतिष्ठित तथा सम्मानित महीना है बड़ा शुभ महीना है परन्तु कुछ लोग इसे गम (शोक) का महीना कहते हैं यह उनकी बड़ी भूल है। बेशक इस महीने की पहली तारीख को दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हू की वफात हुई थी उनको मरदूद अबू लूलू ने 27 ज़िलहिज्जा को विषैली कटार से घायल किया था और पहली मुहर्रम को वफात हुई वह शहीद हुए। बेशक दस मुहर्रम को करबला की खूनी घटना घटी और हमारे सरदार प्यारे नबी सल्ल0 के प्रिय नवासे हज़रत हुसैन रज़ि0 उनके भाई भतीजे, बेटे घर के 17 लोग और उनके जांनिसारों को उनकी आँखों के सामने शहीद किया गया फिर उनको

भी शहीद किया गया। इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। बेशक बड़े शोक तथा दुख की बात है। हम उन शुहदा को ईसाले सवाब करते हैं उनके बड़े दर्जे हैं परन्तु किसी की शहादत या मौत दुखद घटना से कोई दिन या महीना शोक का महीना नहीं हो जाता। किसी की मौत या शहादत पर उसके अज़ीज़ों को तीन दिन ही शोक मनाने की अनुमति है, मरने वाली की बीवी चार महीने दस दिन शोक मनायेगी उसके पश्चात प्राकृतिक दुख पर तो कोई रोक नहीं परन्तु शोक मनाने की शरीअत में गुंजाइश नहीं।

इस उम्मत के लिए सबसे बड़े शोक का दिन अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जुदाई का दिन है और वह है 12 रबीउल अव्वल तो हम इस रबीउल अव्वल के महीने को शोक का महीना नहीं कहते हैं न उसकी 12 तारीख को न दोशंबा दिन को, फिर हम मुहर्रम के महीने को गम का महीना क्यों कहें? यह हमारी बड़ी भूल है।

इस्लाम में पहली शहादत हज़रत सुमय्या की शहादत के दिन और महीने को कोई जानता भी नहीं, बिअ़रे मऊ़ना के 69 शहीदों की शहादत पर प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ा दुखः हुआ, हज़रत ज़ैद बिन दस्ना की शहादत पर आपको ग़म हुआ, बद्र की लड़ाई में कितने लोग शहीद हुए, उहुद की लड़ाई में प्यारे नबी के प्यारे चचा हज़रत हम्जा रज़ि0 शहीद हुए, क्या जिस दिन या महीने में इन हज़रात की शहादत हुई क्या प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन दिनों और महीनों को शोक का दिन या शोक का महीना मनाने का कोई संकेत दिया हरगिज़ नहीं। फिर क्या हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली रज़ि0 की शहादतों पर सहा–बए–किराम ने शोक का दिन या शोक का महीना मनाया? हरगिज़ नहीं तो फिर करबला के हादिसे पर आ़शूरा के दिन या मुहर्रम के महीने को शोक का दिन या शोक का महीना मानना और उसमें शोक मनाना नौहा पढ़ना या मातम करना, ताज़िया रखना, कैसे सहीह हो सकता है। इसीलिए उलमा ने ताज़ियादारी और नौहा ख़्वानी तथा मातम को हराम लिखा है। हमारे शीआ़ भाईयों की शरीअ़त अलग है उनको देख कर हम सुन्नी भाईयों को इन ग़लत और हराम कामों में न पड़ना चाहिए। बेशक वह बड़ा जालिम या जिसने हमारे सरदार हज़रत हुसैन रज़ि0 और उनके खानदान वालों को क़त्ल का आदेश दिया और उससे ज़ियादा जालिम वह लोग थे जिन्होंने हज़रत हुसैन रज़ि0 पर तीर व तलवार चलाए,

शेष पृष्ठ .....38...पर

—पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत (आज्ञापालन) व महब्बत में क़ौम का कल्याण हैः—

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय के बाद हर तरफ से तौहीद के अक़ीदे की गूंज आने लगी! दुन्या के सारे दर्शनशास्त्रों और विचारधाराओं पर उसका प्रभाव पड़ा कहीं कम कहीं ज़ियादा। बड़े—बड़े धर्म जिनकी रगों में शिर्क और अनेक खुदाओं का अक़ीदा (विश्वास) रच बस गया था किसी न किसी लै में ऐलान करने पर मजबूर हुए कि खुदा एक है और वह अपने बहुदेववादी विश्वासों की व्याख्या पर मजबूर हुए और उनकी ऐसी दार्शनिक व्याख्या करने लगे जिससे उन पर शिर्क का इल्जाम न आये और वह इस्लाम के तौहीद के अक़ीदा से कुछ न कुछ मिलता हुआ नज़र आये। उनको शिर्क का इकरार करने में शर्म और झिझक महसूस होने लगी। और सारी मुशरिकाना (बहुदेववादी) व्यवस्था, सोच व विश्वास, हीनता की भावना से ग्रसित हुए। उस महान उपकारी का महान उपकार यह है कि उसने तौहीद की नेअमत दुन्या को प्रदान की।

आपका दूसरा महान उपकार मानव—एकता की परिकल्पना है। इन्सान क़ौमों और बिरादरियों ज़ात—पात और ऊँच—नीच के वर्गों में बंटा हुआ था। और उनके बीच इन्सानों और जानवरों, आकाओं और गुलामों और बन्दा व खुदा का फर्क था, वहदत व मसावात (एकता व समरसता) की कोई परिकल्पना न थी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सदियों के बाद पहली बार यह क्रान्ति और आश्चर्यजनक ऐलान किया—

अनुवादः— *'लोगो! तुम्हारा पालनहार एक है और तुम्हारा बाप भी एक है, तुम एक आदम की संतान हो और आदम मिट्टी से बने थे। अल्लाह के नज़दीक तुममें से सबसे अधिक प्रतिष्ठित वह है जो तुममें सबसे ज़ियादा परहेज़गार है। किसी अरबी को अजमी (गैर अरब) पर फज़ीलत नहीं मगर तकवा (अल्लाह का डर और लेहाज) के बिना पर।''*

(कनजुल—आमाल)

यह वह शब्द है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने आख़िरी हज में एक लाख चौबीस हजार लोगों के महासम्मेलन में फरमाये थे। इनमें दो वहदतों (एकताओं) का ऐलान किया गया है, और यही वह दो वास्तविक मजबूत बुन्यादें हैं जिन पर मानव जाति की वास्तविक एकता का महल बनाया जा सकता है। और जिसके साये

के नीचे इन्सान को अमन चैन हासिल हो सकता है। और वह सहयोग और सहायता के सिद्धान्त मानवता के नव–निर्माण का काम अंजाम दे सकते हैं। यह दो वहदतें क्या हैं– एक मानव–जाति के ख़ालिक (सृजक) की वहदत, और एक इन्सानी नस्ल के पितामह की वहदत। इस तरह हर इन्सान दूसरे इन्सान से दोहरा रिश्ता रखता है, एक आध्यात्मिक और हकीकी तौर पर, वह यह कि सब इन्सानों और जहानों का रब एक है। दूसरा शारीरिक तौर पर, वह यह कि सब इन्सान एक बाप की औलाद हैं।

जिस समय यह ऐलान किया गया था, उस समय दुन्या इसको सुनने के मूड में न थी। यह ऐलान उस समय की दुन्या में एक भूचाल से कम न था। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो सोपानवार सहन योग्य हो जाती हैं, बिजली का यही हाल है कि इसको पर्दों में रख कर छू लेते हैं, लेकिन बिजली के करेन्ट को कोई डायरेक्ट छू ले तो शरीर में उसका करेन्ट दौड़ जाता और उसका काम तमाम कर देता है। आज ज्ञान–विज्ञान और मानव चिन्तन के विकास की उन मंजिलों ने जो इस्लाम की दावत, इस्लामी समाज की स्थापना, सुधारकों की कोशिशों से तय हुई उस क्रान्तिकारी ऐलान को दैनिक जीवन की हक़ीक़त बना दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के स्टेज से लेकर, जिसने मानवाधिकार चार्टर प्रकाशित किया, प्रत्येक लोकतंत्र तथा हर संस्था की तरफ़ से इन्सानी हुकूक और समानता की घोषणा की जा रही है और कोई इसको सुन कर आश्चर्य चकित नहीं होता। लेकिन एक ज़माना था जब अलग–अलग क़ौमों और खानदानों के माफ़ौकल बशर (मनुष्य की शक्ति से बाहर की चीज़) होने का अक़ीदा कायम था और बहुत सी नस्लों और खानदानों का नसब नामा (शज़रा) ख़ुदा से और सूरज चाँद से मिलाया जा रहा था। कुर्आन ने यहूदियों और ईसाइयों का कथन नकल किया है कि हम खुदा की लाडली और चहेती औलाद की तरह हैं। मिस्र के फिरऔन अपने को सूरज देवता का अवतार कहते थे। हिन्दुस्तान में सूर्य वंशी और चन्द्रवंशी खानदान मौजूद थे। ईरान के बादशाहों को जिन की उपाधि किस्रा (खुसरो) हुआ करती थी, उसका दावा था कि उनकी नसों में खुदाई खून है। ईरानवासी उन्हें इसी नज़र से देखते थे। उनकी आस्था थी कि इन पैदाइशी बादशाहों की ख़मीर में कोई पवित्र आसमानी चीज़ शामिल है। कियानी वंशज के अन्तिम ईरानी सम्राट यज़्दगर्द का नाम बताता है कि वह और ईरानी उनको खुदा के कितने करीब समझते थे।

चीनी अपने बादशाह को आसमान का बेटा समझते थे। उनका अक़ीदा (विश्वास) था कि आसमान नर और ज़मीन मादा है। इन दोनों के मेल से ब्रह्माण्ड की रचना हुई और बादशाह इस जोड़े का पहला बेटा है। अरब अपने अलावा सारी दुन्या को गूंगा और बेज़बान (अजम) कहते थे उनका सबसे विशिष्ट क़बीला कुरैश आम अरबों से भी अपने को उत्कृष्ट समझता था और इसी एहसासबरतरी में हज के ऐसे सार्वजनिक सम्मेलन में भी अपनी विशिष्टता को क़ायम रखता था। कुर्आन ने इस माहौल में ऐलान किया:—

अनुवाद:— *ऐ लोगो! हमने तुमको एक ही मर्द और एक ही औरत से पैदा किया और तुम्हें बिरादरियों और कबीलों का रूप दिया, ताकि तुम एक—दूसरे को पहचानों, अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे इज़्ज़त वाला वह है, जो तुममें सबसे ज़ियादा मुत्तक़ी (परहेज़गार) है।*

(सूर: अल हुजुरात—13)

आपका तीसरा महान उपकार मानव सम्मान की वह इस्लामी परिकल्पना है जो इस्लाम की भेंट है। इस्लाम के उदयकाल में इन्सान से अधिक अपमानित कोई नहीं था। उसका अस्तित्व बे क़ीमत हो कर रह गया था। कभी कभी तो पालतू जानवर, कुछ ''पवित्र'' हैवानों, कुछ वृक्ष, इन्सान से कहीं अधिक क़ीमती और माननीय थे। उनके लिए निःसंकोच इन्सानों की जानें ली जा सकती थीं, और इन्सानों के ख़ून और गोश्त के चढ़ावे चढ़ाये जा सकते थे। आज भी कुछ बड़े—बड़े विकसित देशों में इसके नमूने देखे जा सकते हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन्सानों के मन—मस्तिष्क में यह छाप बैठा दी कि इन्सान इस सृष्टि का सबसे अधिक क़ीमती, माननीय प्रेम और हिफाजत का पात्र है। आपने मनुष्य को ऐसी प्रतिष्ठा दी कि उससे ऊपर सिर्फ सृष्टि के रचयिता की हस्ती रह जाती है। क़ुर्आन ने ऐलान किया कि वह ख़ुदा का नायब है। सारी दुन्या उसी के लिए पैदा की गई—

अनुवाद:—*वह अल्लाह जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की तमाम चीज़ों को पैदा किया।*

(सूर: अल—बकरा 29)

अनुवाद:— *और 'हमने' आदम की औलाद को इज़्ज़त दी, और उनको थल और जल में सवारी और अच्छी पाक रोज़ी दी और अपनी बहुत सी मख़्लूक़ सृष्टि पर फ़जीलत (श्रेष्ठता) दी। (सूर: इस्रा 70)*

इससे अधिक इसकी प्रतिष्ठा और क्या हो सकती है कि साफ कह दिया गया कि इन्सान ख़ुदा का कुँबा (परिवार) है और ख़ुदा को अपने बन्दों में सबसे अधिक प्रिय वह है जो उसके कुटुम्ब के साथ अच्छा व्यवहार करे और उसको आराम पहुँचाये।

जारी..........

❖❖❖

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

उ़मर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह0

हाकिमों को आदेशः–

राजधिकारियों को ताकीद थी कि प्रजा के साथ दया तथा प्रेम का व्यवहार करें। अपने को उनका हाकिम न समझें बल्कि उनका सेवक जानें। न्याय तथा इंसाफ़ के साथ उनकी सेवा करने को अपने जीवन का उद्देश्य समझें। हाकिमों को भेंट स्वीकार करने से मना कर दिया था। कुछ लोगों ने कहा, अमीरुल–मोमिनीन, इसमें क्या बाधा है। उपहार तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी स्वीकार किया है। परन्तु आप ने उत्तर दिया, ''हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यहां पर उदाहरण देना उचित नहीं।'' लोग आपकी सेवा में जो कुछ उपहार स्वरूप प्रस्तुत करते थे, उसमें हुकूमत के प्रभाव का कोई भी प्रश्न ही न था, परन्तु अब हाकिमों को जो कुछ प्रस्तुत किया जाता है, वह हुकूमत के ध्यान से स्वार्थ हेतु दिया जाता है। अतः यह भेंट नहीं, घूस है। इसलिए इसकी आज्ञा नहीं दी जा सकती।

सरकारी आय से अपने को बचानाः–

जिस प्रकार राज्य अधिकारियों को राजकीय आय से परहेज़ करने की ताकीद की थी, उसी प्रकार स्वयं प्रजा के धन से बचने का प्रयास करते थे। देश की आय को जनता की सम्पत्ति समझते थे। इसी विषय में उनकी सावधानियों की अनेकों घटनायें इतिहासकारों ने बयान की हैं। हम यहां पर कुछ घटनाओं का उल्लेख कर रहे हैं—

जार्डन देश की खजूरें बहुत ही प्रसिद्ध थीं। वहां के गर्वनर ने आपके लिए दो टोकरी ख़जूरें डाक के साथ भेज दीं। जब टोकरियां उनके सम्मुख लायी गयीं, तो आपने पूछा, यह ख़जूरें किस प्रकार आई हैं? लोगों ने बताया कि अमुक अधिकारी ने डाक के साथ भेज दी हैं। यह सुन कर आपने कहा, मुझे क्या अधिकार है कि आम जनता के मुक़ाबले में, डाक के जानवर से मैं व्यक्तिगत लाभ उठाऊँ। यह कह कर आपने आज्ञा दी कि यह ख़जूरें ले जा कर बाज़ार में बेच दी जायें और इस प्रकार प्राप्त मूल्य से इन जानवरों के चारे का प्रबन्ध किया जाये।

अपार संयमः–

दमिश्क़ में बड़े कड़ाके की सर्दी पड़ती है। प्रातः रात्रि के समय वुजू तथा स्नान के लिए गर्म पानी की आवश्यकता होती है यह काम नौकर के ज़िम्मे था कि

गर्म पानी का प्रबन्ध करे। किसी अवधि में नौकर ने अपनी सुगमता हेतु यह करना आरम्भ किया कि स्वयं आग जलाकर पानी गर्म करने के बजाये, उस हम्माम (स्नानगृह) में, जो कि सरकार की ओर से सामान्य जनता के लिए बनवाया गया था, पानी का बर्तन रख देता था और थोड़ी देर में पानी गर्म करके ले आता था। एक दिन हज़रत उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ रह0 को कुछ शंका हुई। आपने नौकर से पूछा कि पानी कहाँ से गर्म करके ला रहे हो? आपके प्रश्न करने पर उसने उत्तर दिया कि सामान्य हम्माम से गर्म करके ला रहा हूँ। आपको बहुत दुःख हुआ। नौकर को चेतावनी दी और कुछ जानकार लोगों को बुला कर पूछा कि इतने पानी के गर्म होने पर बैतुलमाल की कितनी लकड़ियां जलीं? उन लोगों ने जो अनुमान लगाया, उसी के अनुसार लकड़ियों का मूल्य अपने पास से बैतुलमाल में जमा कर दिया।

सावधानता का अनुपम उदाहरणः–

एक बार सरकारी ख़िराज में कहीं से कस्तूरी आई। उसकी सुगन्ध अनुभूत हुई तो आपने अपनी नाक बन्द कर ली। लोगों ने पूछा, अमीरुल–मोमिनीन, इसकी क्या आवश्यकता है। कस्तूरी आप अपने काम में तो ला नहीं रहे हैं। यह सुन कर आपने उत्तर दिया कि कस्तूरी की सुगन्ध अति लाभदायक होती है, मैंने जब उसकी ख़ुशबू सूँघ ली, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि मैंने उससे कोई लाभ नहीं उठाया, राज्य की आय से बचने में इतनी सूक्ष्म दार्शकताअधिकारी को शिक्षा देने के लिए थी ताकि ख़लीफ़ा की इतनी सावधानता के बाद उनको नाजायज़ तरीक़े से आमदनी का तनिक भी ध्यान न आ सके।

एक दूसरी घटनाः–

एक और आश्चर्य–जनक घटना सुनिये, किसी गवर्नर ने एक दूत भेजा कि ख़लीफ़ा के पास जा कर रिपोर्ट पेश करे और उस दूर–दराज़ के प्रान्त की परिस्थतियों से उन्हें सूचित करे। वह जिस समय मकान पर पहुंचा, आप सोने ही वाले थे। परन्तु, जैसे ही दूत के आगमन की सूचना मिली, आप उठ कर बैठ गए और दीप जला दिया दूत ने सेवा में उपस्थित हो कर सारा वृत्तान्त कह दिया। आप ने स्वयं बहुत सी बातों के विषय में प्रश्न किए। इस सबके बाद दूत ने आपके और आपके सम्बन्धियों के बारे में पूछना आरम्भ किया। आपने कहा, तनिक ठहरो, फिर दास को आवाज़ दी कि दीपक लाओ। थोड़ी देर में एक टिमटिमाता दिया आ गया और आपने पहला दीपक बुझा दिया और दूत से कहा कि हाँ, अब कहो,

क्या पूछते हो? उसने आपकी कुशलता पूछी और आप ही से सम्बन्धित अन्य बातें पूछीं। आपने हर बात का उत्तर दिया। अन्त में दूत ने पूछा, अमीरुल–मोमिनीन, एक बात और पूछना चाहता हूं जिसकी मुझे बड़ी चिन्ता है, और वह यह कि मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि आख़िर एक जलते हुए दीपक को गुल करके दूसरा टिमटिमाता हुआ दिया क्यों मंगवाया? दूत का यह प्रश्न सुन कर आपने कहा, सुनो पहले तुम मुझ से राजकीय विषयों पर वार्तालाप कर रहे थे और यह मेरा नीजी मामला न था बल्कि इसका सम्बन्ध सर्वसाधारण से था। अतः मैंने वह दीपक जलने दिया जो बैतुलमाल का था। परन्तु, जब तुमने मेरे व्यक्तिगत मामलों के विषय में पूछना आरम्भ किया, तो मैंने उसे उचित न समझा कि सरकारी दीप प्रयोग किया जाय। इसलिए अपना निजी दिया मंगवाया।

ख़िलाफ़त के पूर्व बड़े सुख तथा आनन्द का जीवन व्यतीत करते थे। शानदार भवन में रहते, मूल्यवान वस्त्रों का प्रयोग करते, सर्वोत्तम तथा स्वादिष्ट भोजन करते, लेकिन ख़लीफ़ा होने के बाद जनता की चिन्ता के अतिरिक्त अपनी ओर कोई ध्यान ही न था। मोटा–झोटा खाते, फटा–पुराना पहनते और बहुत ही साधारण जीवन व्यतीत करते थे।

वस्त्रः–

एक बार दास से चादर मंगवाई। उसने चादर ला कर दी। आपने हाथ से स्पर्श करते हुए कहा– उफ़्फ़ोह! कितना कोमल है। यह सुन कर दास मुस्करा दिया। आप ने पूछा, क्यों मुस्कराते हो? उसने कहा, अमीरुल–मोमिनीन, देखते ही देखते इस विशाल परिवर्तन पर आश्चर्य होता है। कहां तो आपकी यह दशा थी कि ख़िलाफ़त से पूर्व, एक बार आपके लिए आठ सौ दिर्हम की चादर ख़रीद कर लाया था। जिसे देख कर आपने कहा था कि यह बहुत खुरदरी है परन्तु आज ख़लीफ़ा हो जाने के बाद आपके तप तथा संयम की यह दशा हो गई कि आठ दिर्हम की चादर भी आपको बहुत ही कोमल अनुभव हो रही है।

एक क़मीस के अतिरिक्त दूसरी न होती। जब वह मैली हो जाती थी तो उसको धो कर फिर पहन लेते। एक बार जुमा की नमाज़ में कुछ देर हो गई। लोगों ने कारण पूछा तो क्षमा याचना करते हुए कहा, भाई क़मीस सूखने में देर हो गई। दूसरी क़मीस न तो धोने का मौक़ा था और न उतारना ही उचित था, अतः कुछ दिनों में क़मीस बहुत मैली हो गई। आपके साले

मुहम्मद इब्न सलमा रह0 कुशल पूछने के लिए आए तो उन्होंने अपनी बहन को धितकारा कि इतना मैला कुर्ता क्यों पहन रखा है, इसे बदल दो? फ़ातिमा ने उत्तर दिया, भाई, यही एक कुर्ता है, यदि इसे धोऊँ तो इस बीच वह क्या पहनें?

भोजनः–

भोजन की दशा इससे भी गिरी हुई थी। अच्छे तथा स्वादिष्ट भोजन की बात तो अलग रही, समस्त शासन काल में कभी पेट भर मोटा झोटा भोजन भी न कर सके, और ख़र्चा पूरा होता भी कैसे, केवल दो दिर्हम दैनिक अपना वेतन नियत किया था। यही चाहते थे कि ग़रीब से ग़रीब की आय भी उनसे कम न हो। इस मामले में बिल्कुल अपने नाना हज़रत उमर रह0 का अनुसरण करते थे। इतनी कम आय की वजह से आप और आपके घर वाले ऐसा कठोर जीवन व्यतीत करते थे कि उनकी यह दशा देख कर लोगों को उन पर दया आती थी।

मकानः–

एक बार इराक़ देश से कोई औरत इसलिए आई कि अमीरुल–मोमिनीन से अपना दुःख–दर्द बयान करके बैतुलमाल से कोई उचित सहायता प्राप्त करेगी। वह औरत जब आपके मकान में आई तो उस घर की दीनता तथा दरिद्रता देख कर उसके मुख से सहसा यह शब्द निकले– ''मैं आई थी कि ख़लीफ़ा से अपने घर की दशा सुधारने के लिए कुछ सहायता माँगूंगी परन्तु इस उजड़े तथा वीरान घर से मुझे क्या मिल सकेगा।'' आपकी धर्मपत्नी फ़ातिमा ने वाक्य सुने तो कहा, ''तुम्ही लोगों के घरों के सुख की चिन्ता ने इस घर को उजाड़ दिया है।'' अभी यह बातें हो ही रही थीं कि हज़रत उमर इब्न अब्दुल अज़ीज़ रह0 घर में आए और सीधे कुएं पर जा कर डोल भर–भर कर मिट्टी में डालने लगे। उस स्त्री ने इससे पहले कभी आपको देखा न था। उनकी इस आभा को देख कर वह समझी कि कोई मजदूर है जो घर में मिट्टी लगाने के लिए गारा बना रहा है। उसने फ़ातिमा से कहा, अपने मुंह पर कुछ डाल लो, मज़दूर तुम्हें देख रहा है। परन्तु उसके आश्चर्य की सीमा न रही जब हज़रत फ़ातिमा ने कहा कि यह गारा बानाने वाला मज़दूर नहीं बल्कि स्वयं अमीरुल–मोमिनीन हैं।

देखने वाले का ब्यानः–

एक दिन मुहम्मद इब्न कअ़ब रह0 आए। ख़िलाफ़त से पूर्व उन्होंने आपको मदीनाः मुनव्वरा में देखा था। उस समय आपका चेहरा हरा–भरा और निखरा

हुआ था लेकिन अब जो उन पर दृष्टि पड़ी, तो मुखड़े की चमक—दमक समाप्त हो चुकी थी, सिर के बाल झड़ गए थे और शरीर सूख कर काँटा हो गया था। यह दशा देख कर मुहम्मद इब्न कअ़ब रह0 सन्नाटे में आ गये। कुछ देर विस्मय पूर्वक देखते रहे। उनके इस प्रकार देखने पर हज़रत उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ रह0 ने पूछा, कअ़ब (रह0) कुशल तो है, तुम इतने ध्यान से क्या देख रहे हो? उत्तर दिया, अमीरुल—मोमिनीन, ख़िलाफ़त से पूर्व आप कैसे खिले हुए और हृष्ट—पुष्ट थे, परन्तु ख़िलाफत के कुछ ही समय पश्चात आपकी यह दशा हो गई। उनकी बातें सुन कर आपने कहा, इब्ने कअ़ब रह0! अभी तो जीवित हूँ, शरीर में मामूली से परिवर्तन हुआ है। उस समय यदि तुम मुझे देखोगे, तो तुम्हारी क्या दशा होगी, जब मैं मर चुका हूंगा और क़ब्र में गए हुए कई दिन बीत चुके होंगे। मूल वस्तु तो मनुष्य की आत्मा है, उसे जीर्ण तथा विकृत न होना चाहिए, शरीर तो गलने—सड़ने तथा नष्ट भ्रष्ट होने के लिए है ही।

इस प्रकार के जीवन ने उनके स्वास्थ्य को इतना गिरा दिया था कि देखने वालों को दया आती थी। इब्ने कअ़ब रह0 के अतिरिक्त और भी अनेकों व्यक्तियों ने उन्हें समझाया कि अपने शरीर की ओर भी ध्यान दें। कुछ विद्वानों ने यह भी कहा कि आखिर बैतुलमाल में आपका भी अधिकार है। इससे इतना अवश्य लीजिए कि आपका तथा आपके बाल बच्चों का सुखपूर्वक जीवन निर्वाह हो सके। परन्तु आपने इस्लामी दृष्टिकोण से शासन का जो उच्च तथा श्रेष्ठ आदर्श निर्धारित किया था, कि शासक को सर्वसामान्य के न्यूनतम जीवन स्तर को ध्यान में रख कर अपना जीवन स्तर स्थापित करना चाहिए, उसके आधार पर आपने इस विषय में किसी का भी परामर्श स्वीकार न किया और राजसी वैभव तथा ठाट—बाट के युग में लोगों को जनहित तथा लोकसेवा का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जो क़यामत तक शासकों के लिए मार्ग— प्रदर्शक का काम देगा और सारा संसार आपके चरित्र में इस्लामी शासन के सिद्धान्तों का मनोरम चित्र देखता रहेगा, जो मानव जाति को मोहित बनाने का कारण बनेगा और समता तथा स्वाधीनता इच्छुकों एवं जनतन्त्र प्रेमियों के लिए मार्ग—दीप होगा, जिसके प्रकाश में वह निरन्तर अपनी सही मंज़िल का निर्धारण करते रहेंगे।

❖❖❖

मानव अधिकार दिवस और दुन्या का वर्तमान हाल

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 प्रस्तुतिः मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इस्लाम मानव सम्मान और मानव अधिकार का इतना लिहाज़ करता है कि वह किसी की निन्दा और उपहास करने की अनुमति नहीं देता है, कुर्आन शरीफ़ स्पष्ट रूप से एलान करता हैः— ''ऐ लोगो जो ईमान लाये हो, न मर्द दूसरे मर्दों की हंसी उड़ाऐं, हो सकता है कि वे उनसे अच्छे हों, और न औरतें दूसरी औरतों की हंसी उड़ाऐं, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों। आपस में एक दूसरे पर व्यंग (तअ़न तशनीअ़) न करो और न एक दूसरे को बुरी उपाधि से याद करो, ईमान लाने के बाद दुराचार में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है, जो लोग इस नीति से बाज़ न आएं वे ज़ालिम हैं।

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बहुत गुमान करने से बचो कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं, टोह में मत पड़ो, और तुम में से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा (ग़ीबत) न करे, क्या तुममें कोई ऐसा है जो अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाना पसन्द करेगा, देखो तुम ख़ुद इससे धिन खाते हो। अल्लाह से डरो, अल्लाह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला और दयावान है।''

(सूरः अल—हुजरातः 11—12)

इस्लाम जातिवाद और पक्षपात के बीच भेदभाव करने से रोकता है, चुनांचि कुरआन करीम में इरशाद फ़रमाया गया है ''ऐ लोगो हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है और हमने तुमको विभिन्न कुंबों और ख़ानदानों में बांट दिया ताकि एक दूसरे को पहचान सको, अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे ज़ियादा सम्मानित वह है जो तुममें सबसे ज़ियादा परहेज़गार (सदाचारी) है, बेशक अल्लाह जानने वाला ख़बर रखने वाला है।

(सूरः अल—हुजरातः —12)

एक मौक़े पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया ''ऐ लोगो तुम्हारा रब एक और तुम्हारा मूरिसे आला (मूल पुरुष) भी एक है, सब आदम की औलाद हैं और आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बने हैं, अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे मुकर्रम (सम्मानित) वह शख़्स है जो तुममें सबसे ज़ियादा मुत्तक़ी (सदाचारी) है, किसी अरबी को, किसी अजमी पर फ़ज़ीलत सिर्फ़ तक़वे (परहेज़गारी) ही

की बुन्याद पर दी जा सकती है'' । (कनज़ुल आमाल)

एक और हदीस में आया है कि अल्लाह तआला ने तुम से ज़माने जाहिलयत की असबियत (पक्षपाति) और बाप दादा पर फ़ख़्र (अभिमान) करने को ख़त्म कर दिया है, इन्सान या तो मोमिन मुत्तक़ी है या फ़ाजिर बदबख़्त (दुराचार दुर्भाग्य) सब आदम की औलाद हैं और आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बने हैं, किसी अरबी को किसी अजमी पर कोई फ़ज़ीलत (प्रमुखता) नहीं है, मगर तक़वे की बुन्याद पर, (तिर्मिज़ी)।

इस्लाम ने मनुष्य की महानता को प्रभावित करने वाले सूत्रों पर प्रतिबन्ध लगाया है, उन पर पाबन्दी लगा दी है, अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है– ''जिसने किसी इन्सान को क़त्ल के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला, उसने मानो सारे ही इन्सानों को क़त्ल कर दिया, और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानों सारे इन्सानों को जीवन दान दिया।''

(सूरः अल–माइदा–32)

मानव सम्मान में अक़ीदे का भी सम्मान शामिल है, इसलिए इस्लाम में दूसरे मज़हबों के मानने वालों को बुरा भला कहने, उनके साथ दुर्व्यवहार करने और दूसरे मज़हब के पवित्र लोगों के लिए अशोभनीय शब्दों के प्रयोग से मना किया है, क़ुरआन मजीद में फ़रमाया गया है ''रसूल, रब की तरफ़ से नाज़िल होने वाले हुक्मों पर ईमान ले आए और ईमान वाले भी, सबके सब अल्लाह पर, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, हम उसके रसूलों में से किसी में भेदभाव नहीं करते''।

(सूरः अल बकरह–285)

क़ुर्आन मजीद में एक दूसरी जगह पर है ''जो लोग ख़ुदा को छोड़ कर दूसरों को पुकारते हैं उनको बुराभला मत कहो वरना वह नादानी और दुशमनी में ख़ुदा को बुरा भला कहेंगे, इसी तरह हमने हर क़ौम के अमल को सुसज्जित कर दिया है, फिर सबके सब अपने परवरदिगार के पास लौट आएंगे, फिर अल्लाह तआ़ला उनको बतला देगा जो वह किया करते थे।

(सूरः अल–अनआ़म–108)

इसी प्रकार क़ुरआन आर्थिक दृष्टि से किसी का अपमान करने से रोकता है और फ़क़ीरों और मुहताजों पर अपना माल ख़र्च करने पर उभारता है ''और वह

अपने पर दूसरों को प्रधानता देते हैं अगरचि स्वयं उन्हें ज़रूरत हो, और जो लोग लालच से बचा लिये गये वही लोग कामयाब हैं''।

(सूरः अल हश्र—9)

एक दूसरी जगह इरशाद है ''और बावजूदे कि उन्हें खाने की चाहत हो वह मिसकीनों यतीमों और क़ैदियों को खाना खिलाते हैं''।

(सूरः अल—दहर—8)

इस्लाम ने राजनीति के विषय में भी न्याय करने की चेतावनी दी है यहां तक कि दुर्व्यवहार करने वालों के साथ भी न्याय करने का आदेश दिया हैः ''तुम्हें किसी क़ौम की दुशमनी कि उन्होंने ने तुम्हें मस्जिदे—हराम से रोका तुमको ज़ियादती पर न उभार दे और (देखो) भलाई और तकवे के कामों में आपस में एक दूसरे की मदद किया करो और पाप व सरकशी में एक दूसरे की मदद न करना और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला सख़्त सज़ा देने वाला है''।

(सूरः अल—माइदा—2)

और क़ुर्आन करीम में दूसरी जगह इरशाद बारी तआला है ''ऐ ईमान वालो, इन्साफ़ के साथ गवाही देने को अल्लाह तआला के लिए खड़े हो जाया करो और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम इन्साफ़ न करो, इन्साफ़ करते रहो यही तक़वे से निकट है और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह तुम्हारे कामों से अवगत है।

(सूरः अल—माइदा—8)

मानवाधिकार की घोषणा इस योग्य थी कि वह जातियां बढ़ कर उसका स्वागत करतीं जो जंगों से निढाल थीं विशेष रूप से मुसलमान जिनके मुल्कों पर पश्चिमी साम्राज्य का आक्रमण हो रहा था जिसके परिणाम उनका धर्म, सभ्यता और अक़ीदा मिट रहा था मानव अधिकार की यह घोषणा एक खोखला नअ़रा साबित हुआ, मुसलमान दुन्या के विभिन्न देशों में कठिनाइयों और परेशानियों का सामना कर रहे हैं और उनके मौलिक अधिकारों की उपेक्षा की जा रही है उनके दीनी शिआ़र (चिन्ह) और पवित्र स्थानों का अपमान करके उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा रहे हैं, और उनको आहत कर रहे हैं। यह सब राजनीतिज्ञयों और मीडिया वालों से पोशीदा नहीं। दुन्या में मानवाधिकार की रक्षा के लिए बहुत सी संस्थाएं स्थापित हैं लेकिन ये संस्थाएं मुसलमानों के संबंध से ख़ामोश हैं, विश्व मीडिया वास्तविकता को छुपाने के साधन अपनाता है, उनको बदनाम करने के

झूठे इलज़ाम तलाश्ता है, इन सब तरीक़ों को मानवाधिकार का विरोध नहीं कहा जाता बल्कि उसे आज़ादिये राय (मत स्वतंत्रता) का नाम दे कर उसको उचित ठहराया जाता है।

इस समय इस्लामी देशों में ऐसी हुकूमतें क़ाएम हैं जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से बाहरी ताक़तों के अधीन हैं, यूरोपियन प्रामर्श दाता और राजनीतिज्ञ मुस्लिम देशों की वैदिशिक नीति और आन्तरिक नीति तय करते हैं, जनता और शासकों के बीच संबन्धों और संपर्क पर नज़र रखते हैं, इसी कारण इस समय इस्लामी विश्व के अधिकतर देशों में मानवाधिकार की सूरतेहाल बहुत खेदजनक है, सबसे अधिक कष्ट दायक बात यह है कि जो लोग मानवाधिकार की रक्षा में काम कर रहे हैं उन्हें जेल की सलाखों में डाल दिया गया है, या उन पर भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये गये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सूचना विभाग द्वारा यह ज्ञात होता है कि कुछ अरब देशों में समाजी कार्यकर्ताओं और समाज सुधार काम करने वाले, इस्लामी रीति रिवाज की रक्षा करने वाले जेलों में सज़ा काट रहे हैं, यह सूरते हाल केवल इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध नहीं बल्कि मानवाधिकार के विश्व घोषणा पत्र की खुली खिलाफ़वर्ज़ी (अवज्ञा) है। ज़रूरत है कि *"Human Rights Charter"* के एक एक शब्द को पढ़ा जाये और जायजा लिया जाये और उसको दुन्या के हर देश पर लागू किया जाये, और इसमें जाति और धर्म की बुन्याद पर कोई अन्तर न किया जाये जो इसकी अवज्ञा करे उसको सज़ा दी जाये, मानवाधिकार कमीशन को स्वतंत्र और कर्मठ बनाया जाये। और उसकी शिफारिशात और कार्यवाइयों को यकीनी बनाये वरना इस मानवाधिका का क्या लाभ?

❖❖❖

प्यारे नबी की ....

उठ खड़ा हो गया, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 उसको देखने लगे, जब वह मस्जिद से निकल गया तो कहने लगे इस शख़्स ने अबुल कासिम सल्ल0 की नाफरमानी की। (मुस्लिम)

खुशबू वापस करने की मुमानियतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जिस को खुशबूदार फूल वगैरा हद्या किया जाये तो उसको वापस न करे, इसलिए कि एक हलकी फुलकी चीज़ है लेकिन खुशबू अच्छी है।

(बुख़ारी)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: मुहर्रम में ताज़िया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तर: मुरव्वजा (प्रचलित) ताज़ियादारी नाजाइज़ है। देवबन्दी, अहले हदीस और बरेलवी उलमा में इस मसअले में कोई इख्तिलाफ नहीं है सब ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं।

प्रश्न: एक शख्स की शादी हुई, तीन साल तक उसके यहां कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ, किसी के कहने से उसने नज़्र मानी कि अगर हमारे यहाँ बच्चा पैदा होगा तो हम मुहर्रम में ताज़िया रखेंगे, अल्लाह की मस्लहत उसके यहां बच्चा पैदा हुआ, उसको किसी ने बताया कि ताज़ियादारी नाजाइज़ है अब वह पूछता है कि अब वह क्या करे?

उत्तर: नाजाइज़ काम की नज्र पूरी करना नाजाइज़ है इसलिए वह ताज़िया न रखे और उसने नाजाइज़ काम की नज्र मान कर बड़ा गुनाह किया इस पर वह तौबा करे इस्तिगफार करे और अगर उसअत हो तो बच्चे की पैदाइश के शुक्रिये में कुछ अल्लाह की राह में खर्च करे।

प्रश्न: वुजू में फर्ज़ कितने हैं?

उत्तर: वुजू में चार फर्ज़ हैं। (1) पेशानी के बालों से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान से दूसरे कान तक मुंह धोना। (2) दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोना। (3) चौथाई सर का मसह करना। (4) दोनों पाँव टखनों समेत धोना।

प्रश्न: वुजू में कितनी सुन्नतें हैं?

उत्तर: वुजू में तेरह सुन्नतें हैं। (1) नीयत करना (2) बिस्मिल्लाह पढ़ना (3) पहले तीन बार दोनों हाथ गट्टों तक धोना (4) मिस्वाक करना (5) तीन बार कुल्ली करना (6) तीन बार नाक में पानी डालना (7) दाढ़ी का खिलाल करना (8) हाथ पांव की उन्गलियों का खिलाल करना (9) हर अ़ज़्व (अंग) को तीन बार धोना (10) एक बार पूरे सर का मसह करना, यानी भीगा हुआ हाथ फेरना (11) दोनों कानों का मसह करना (12) तरतीब से वुजू करना (13) पै दरपै वुजू करना कि एक अ़ज़्व खुश्क न होने पाये कि दूसरा अज़्व धो लें।

प्रश्न: वुजू में कितनी चीज़ें मकरूह हैं?

उत्तर: (1) नापाक जगह पर वुजू करना (2) सीधे हाथ से नाक साफ करना (3) वुजू करने में दुन्या की बातें करना (4) सुन्नत के खिलाफ वुजू करना।

प्रश्नः कितनी चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है?

उत्तरः आठ चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है (1) पाखाना पेशाब करना या उन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना (2) रीह यानी हवा का पीछे से निकलना (3) बदन के किसी मुक़ाम से खून या पीप का निकल कर बह जाना (4) मुँह भर के कै होना (5) लेट कर या सहारा लगा कर सो जाना (6) बीमारी या किसी और वजह से बेहोश हो जाना (7) मजनून यानी दीवाना (पागल) हो जाना (8) नमाज़ में कहकहा मार कर हंसना।

प्रश्नः गुस्ल का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः गुस्ल का तरीक़ा यह है कि अव्वल दोनों हाथ गट्टों तक धोये फिर इस्तिन्जा करे और बदन से हक़ीक़ी नजासत धो डाले फिर वुज़ू करे, फिर तमाम बदन को थोड़ा पानी डाल कर हाथों से मले, फिर सारे बदन पर तीन बार पानी बहाये, कुल्ली करे नाक में पानी डाले।

प्रश्नः गुस्ल में फर्ज़ कितने हैं?

उत्तरः अगर गुस्ल फर्ज़ है तो उस गुस्ल में तीन फर्ज़ हैं (1) गरारे के साथ कुल्ली करना, (मगर रोज़े की हालत में मुआफ़ है) (2) नाक के नथनों तक पानी पहुंचाना (मगर रोज़े की हालत में नाक के अगले हिस्सा ही तक पानी पहुंचायें)। (3) पूरे बदन पर पानी बहाना।

प्रश्नः गुस्ल किन बातों से फर्ज़ होता है?

उत्तरः गुस्ल फर्ज़ होने के असबाब फिक्ह की किताबों में तफ्सील से लिखे हैं हम यहां इख्तिसार के साथ लिख रहे हैं। शहवत (काम वासना) के साथ मनी (वीर्य) का निकलना, (2) एहतिलाम (स्वप्न दोष) का होना। (3) मुबाशरत (सहवास) करना। (4) औरत को हैज़ आना जब हैज का खून बन्द हो जायेगा तब गुस्ल करेंगी। (5) औरत का बच्चा जनना, जब निफास का खून (प्रसव रक्त) बन्द हो जाने पर गुस्ल करेगी।

प्रश्नः किन मौक़ों पर गुस्ल करना सुन्नत है?

उत्तरः चार मौक़ों पर गुस्ल करना सुन्नत बताया गया है। (1) जुमे की नमाज़ के लिए (2) ईदैन की नमाज़ के लिए (3) उमरा या हज का एहराम बांधने के लिए (4) वक़ूफे अरफात के लिए।

प्रश्नः तवाफ करते वक़्त तीन चक्करों के बाद वुज़ू टूट गया तो अब क्या करे?

उत्तरः अब वह वुज़ू करके जिस जगह वुज़ू टूटा है वहीं से तवाफ शुरुअ करे और बक़ीया तवाफ के चक्कर पूरे कर के सात चक्कर पूरे करे, लेकिन बेहतर और अफ़्ज़ल यह है कि सात चक्करों से पहले वुज़ू टूट जाये तो वुज़ू करके नये सिरे से सातों चक्कर पूरे करे।

(गुनीय तुन्नासिकः 68 कदीम)

प्रश्नः सिले कपड़े उतार कर एहराम की दो चादरें पहन ले, दो रक्अत नमाज़ पढ़ने का मौक़ा न मिले, दो रक्अत नमाज़ पढ़े बगैर उमरा की नीयत कर के लब्बैक पढ़ ले तो उमरे का एहराम सहीह होगा या नहीं?

उत्तरः उमरा या हज का एहराम बांधने से पहले दो रक्अत नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है अगर नहीं पढ़ी और उमरे की नीयत करके लब्बैक पढ़ ली तो उमरे का एहराम सहीह हो जायेगा।

प्रश्नः एक हिन्दोस्तानी बाशिन्दा मक्का मुकर्रमा में एक दुकान पर नौकरी करता है वह छुट्टी में अपने घर हिन्दोस्तान आया छुट्टी पूरी करके फिर वह मक्का मुकर्रमा अपनी नौकरी पर जायेगा क्या उसके लिए ज़रूरी है कि वह एहराम बांधे बगैर मीक़ात पार न करे?

उत्तरः मीक़ात से बाहर रहने वाले आफ़ाक़ी कहलाते हैं आफ़ाक़ी अगर मक्का मुकर्रमा जाने का इरादा करेगा तो चाहे वह वहां नौकरी करता हो मीक़ात पर उमरा या हज का एहराम बांधे बगैर मक्का मुकर्रमा हाज़िर होना दुरुस्त नहीं वह मीक़ात पर उमरा या हज का एहराम बांध कर मक्का मुकर्रमा हाज़िर हो अगर उमरे का एहराम बांधा तो उमरा पूरा करके अपनी नौकरी पर जायेगा अगर हज का एहराम बांधा है तो वहां पहुंच कर हज अदा करे।

(दुर्रे मुखतार मए रद्दुल मुहतार)

प्रश्नः एक मदरसा लोगों की तरफ से पड़वों की कुर्बानी का नज़्म करता है हर पड़वे पर सात सात हिस्से दारों को नामजद कर देता है, ज़ब्ह करने वाला ज़ब्ह के वक़्त सिर्फ बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर ज़ब्ह कर देता है हिस्सेदारों के नाम नहीं लेता है तो हिस्से दारों की तरफ से कुर्बानी हो जाती है या नहीं?

उत्तरः पूछे गये प्रश्न में मदरसे वालों ने जिस पड़वे पर जिन हिस्सेदारों के नाम कुर्बानी के लिए मुकर्रर कर दिये, ज़ब्ह करने वाले ने सिर्फ बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ कर ज़ब्ह कर दिया और हिस्सेदारों के नाम नहीं लिए तब भी हिस्सेदारों की तरफ़ से कुर्बानी हो गई।

प्रश्नः कुर्बानी करते वक़्त सिर्फ बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर ज़ब्ह कर दिया पहले की और बाद की दुआ नहीं पढ़ी तो कुर्बानी हुई या नहीं?

उत्तरः सिर्फ बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह कर कुर्बानी ज़ब्ह कर दी तब भी कुर्बानी हो गई पहले और बाद की दुआएं पढ़ना सिर्फ मुस्तहब हैं।

❖❖❖

सांसारिक जीवन की वास्तविकता की शुद्ध उपमा

—डॉ0 मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी —हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा मोण्ढ़ा पकड़ कर कहा, अनुवादः ''इस संसार में इस प्रकार रहो जैसे तू एक यात्री हो अथवा पथित हो'' इब्ने माजा में इतना बढ़ा कर कहा गया है ''और अपने को क़ब्र वालों में से समझ'' अल्लाह तआ़ला ने जब सांसारिक जीवन को भाग्य मे लिख दिया अर्थात सांसारिक जीवन को अनिवार्य किया और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम द्वारा सांसारिक जीवन को आखिरत के जीवन का साधन बता दिया उससे ज्ञात हुआ कि सांसारिक जीवन एक गुज़र जाने वाला जीवन है अर्थात अस्थाई जीवन है और इस सांसारिक जीवन को परीक्षा का जीवन बनाने का निर्णय था इस प्रकार मनुष्य को यह बताना था कि यह संसार तुम्हारे सदैव रहने का नही है, अपितु जीवन अर्थात सदैव रहने वाले जीवन का ऐसा मार्ग है कि उस मार्ग पर चले बिना कोई स्थाई जीवन (आखिरत की ज़िन्दगी) को नहीं पा सकता इस प्रकार मनुष्य को यह बताना था कि तुम इस संसार में अपनी आखिरत की ज़िन्दगी से दूर उसके मार्ग पर एक यात्री हो और अपने वास्तविक अर्थात आखिरत के स्थान से दूर जिस संसार से गुज़र रहे हो उसका स्थान यात्रा मार्ग से अधिक कुछ नहीं।

जिस प्राकर एक यात्री अपनी यात्रा के मार्ग को शीघ्र से शीघ्र समाप्त करके अपने वास्तविक पड़ाव पर पहुंचना चाहता है उसी प्रकार एक ईमान वाला ईमान के साथ अपनी आखिरत की मंज़िल तक पहुंचने के लिए व्याकुल रहता है। और सांसारिक जीवन को और उसकी कठिनाईयों को यात्रा की कठिनाइयां समझता है। परन्तु अपनी यात्रा को सफल बनाने का भरपूर प्रयास करता है। उसका उद्देश्य है कि वह अपनी आख़िरत की मंज़िल में पहुंच कर सुख तथा प्रसन्नता प्राप्त करे। इस प्रकार आख़िरत की सफलता से उसको सांसारिक कठिनाइयां सहन करने में कोई कठिनाई नहीं लगती।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 को यही निर्देश दिया था कि वह सांसारिक जीवन को एक यात्री के

जीवन से अधिक न समझें, और इस संसार में वह एक यात्री के समान ही रहें, मार्गव्यय समाप्त होने की चिंता, स्वदेश का प्रेम, अपने घर वालों और अपनी सन्तान से मिलने की इच्छा, मित्रों तथा सम्बिंधियों को देखने की चाहत, फिर इन तमाम बातों के साथ–साथ यात्रा के उद्देश्य को सफल बनाने की चेष्ठा, यह वह बातें हैं जो आख़िरत के हर यात्री में पाई जाती हैं।

मनुष्य इस संसार में आख़िरत की ज़िन्दगी को सफल बनाने का एक महान उद्देश्य ले कर आया है, उसकी वास्तविक मंज़िल यह सांसारिक जीवन नहीं है अपितु यह सांसारिक जीवन उसकी आख़िरत की ज़िन्दगी की सफलता का साधन है, यदि उसके सांसारिक जीवन की यात्रा आख़िरत की ज़िन्दगी के लिए सफल रही तो निःसंदेह उसको आख़िरत के जीवन की ओर लौटने में प्रसन्नता प्राप्त होगी। और वह आखिरत के जीवन की प्रतीक्षा में रहेगा और आख़िरत के जीवन के लिए लालायित रहेगा। परन्तु यदि उसको ज्ञात होगा कि उसकी आख़िरत की ज़िन्दगी की सफलता के लिए उसका सांसारिक जीवन असफल रहा तो उसको दुख होगा। और उसको आख़िरत के जीवन की ओर लौटने में प्रसन्नता न होगी।

एक मुसलमान जब दुन्या को इस दृष्टिकोण से देखे और सांसारिक जीवन को एक यात्री जैसा क्षणिक जीवन समझे और विश्वास रखे कि वह इस यात्रा में एक अन्य जीवन को सफल बनाने का उद्देश्य ले कर आया है और वही जीवन वास्तविक तथा स्थाई है, तो निःसंदेह उसको अपने उद्देश्य को सफल बनाने तथा अपने लक्ष्य को पा लेने की चिन्ता होगी, वह इस यात्रा में सफलता के उन तमाम साधनों को अपनाएगा जो उसके वश में होंगे।

हदीस का दूसरा भाग है कि तुम अपने आप को क़ब्र वालों में से समझो, जिस प्रकार एक आत्मारहित ढाँचा हर प्रकार के घमण्ड तथा अहंकार से पाक होता है, बिल्कुल इसी तरह वह अपने मन को हर प्रकार के पापों से दूर रखे, या यह कि उसको अपनी मौत का इतना दृढ़ विश्वास हो कि वह अपने को मृतक समझे, तथा हर आने वाले पल को मौत का पल समझे।

प्रत्यक्ष है जब किसी मनुष्य को अपनी मौत का ऐसा विश्वास होगा तो वह सांसारिक आनन्द को प्राप्त करने की चेष्ठा नहीं करेगा, तथा वैध सीमाओं में रहते हुए सांसारिक सुख सामग्रियों से लाभानवित होगा, और इस परिस्थिति में भी वह मौत को किसी समय भी न भूलेगा, अपितु मौत को सामने रखते

हुए अल्लाह के समक्ष उत्तरदायित्व होने की चिन्ता में ग्रस्त रहेगा।

हदीस ''दुन्या में ऐसे रह जैसे एक यात्री अथवा पथित'' से ज्ञात होता है कि वह मानवीय जीवन का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, और इस से ज्ञात होता है कि इस संसार की सुख सामग्रियों तथा जीवन को आनन्द देने वाली बातों से लाभांवित होने का एक दिन लेखा जोखा होगा, सराय में ठहरने वाले यात्री को केवल इस बात की चिन्ता होती है कि उसकी यात्रा सुरक्षा के साथ पूरी हो जाए, उसको इसमें कोई रुचि न होगी कि सराय में उसके काम आने वाली चीज़ों में वृद्धि करे, और सराय की हर चीज़ पर ललचाई हुई निगाह डाले, अपितु उसका एक एक पल सराय में बेचैनी तथा व्याकुलता में बीतेगा, तथा उसको उस शुभ समय की प्रतीक्षा रहेगी जब कि वह उस सराय से अपने वास्तविक वतन की सफलता पूर्वक राह ले।

एक दूसरी हदीस में संकेत है ''एक मनुष्य के लिए दुन्या की सुख सामग्रियों में से उतना ही प्राप्त करना पर्याप्त है जितने से एक यात्री की आवश्यकताएं पूरी हो जाएं।'' एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक चटाई पर लेटा हुआ पाया, और उस चटाई के निशान आपके शरीर पर दिखाई दे रहे थे, यह देख कर हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा ''हुजूर आप अपने लिए इससे नर्म बिस्तर बना लेते तो बेहतर था, उस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उत्तर दिया ''मुझे दुन्या से क्या लेना? मेरी और दुन्या की उपमा उस यात्री जैसी है, जो गर्मियों के ज़माने में यात्रा पर निकला हो, और दिन के किसी भाग में किसी पेड़ के साये में बैठ कर साया ले ले फिर उसे छोड़ कर चला जाए''।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी अगर हमारे सामने हो तो उससे इस संसार की तुच्छता तथा उसका मूल्य रहित होना हम पर स्पष्ट हो जाये, और दुन्या का हर आनन्द, कड़वा तथा हर स्वादिष्ट वस्तु स्वाद रहित हो कर रह जाये। और अल्लाह का दीदार तथा जन्नत का शौक़ दुन्या की हर चीज़ से विमुख कर दे, और यह सांसारिक जीवन बच्चों का खिलौना जैसा लगने लगे।

पवित्र कुर्आन में इसी ओर संकेत करते हुए बताया गया है कि ''सांसारिक जीवन तो केवल आमोद प्रमोद है और आख़िरत का जीवन वास्तविक जीवन है''।

❖❖❖

ज़बान की असावधानी

—मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः मुहम्मद गुफ़रान नदवी

ज़बान अल्लह की एक बड़ी नेमत (सुख सामग्री) है, लेकिन सबसे ज़ियादा इसी नेमत की नाक़दरी की जाती है, और इसका बेजा प्रयोग किया जाता है, इस समय समाज के बिगाड़ का शायद सबसे बड़ा कारण ज़बान की असावधानियां हैं, बहुत लोग होंगे जो शब्द तौल तौल कर बोलते हैं और जिनका अमल इस इरशाद नबवी (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन) पर है ''जो खामोश रहा वह नजात पा गया''।

आदमी जब बोलने पर आता है तो भूल जाता है कि वह क्या क्या ज़बान से निकाल रहा है और उसके क्या नताएज (परिणाम) सामने आने वाले हैं, एक लंबी हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु अन्हु के सवाल के जवाब में इस्लामी आदेशों की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) फ़रमाई, फिर फ़रमाया ''क्या मैं तुम्हें उन तमाम चीज़ों की असल न बताऊँ, मैंने अर्ज किया, ज़रूर इरशाद फ़रमाइये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़बान की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि इसको क़ाबू में रखो, मैंने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी! जो हम ग़फ़्तुगू बात करते हैं, उस पर भी हमारी पकड़ होगी, आपने फ़रमाया ''ऐ मआज़ ''अल्लाह तुम्हारा भला करे, लोगों को मुंह के बल आग में उनकी ज़बान की बक बक ही तो लेजाएगी।''

यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान का चमत्कार है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीस में बेहतरीन मिसाल पेश की, कि जिस प्रकार दराती या हसया से खेत काटे जाते हैं और न जाने क्या क्या घास फूस कटता जाता है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''कि लोग जहन्नम में अपनी ज़बान के बेजा इस्तेमाल के नतीजे में जायेंगे, जब इन्सान ज़बान का बेदरेग़ निःसंकोच इस्तेमाल प्रयोग करता है तो ऐसी ऐसी बातें ज़बान से कहता है कि जो उसको जहन्नम के रास्ते पर डाल देती है और बाज़ मरतबा उसको एहसास भी नहीं होता, वह अपनी ज़बान से न जाने कितने दिलों पर आरे चला देता है, कितने ख़ानदानों में दरारें पैदा कर देता है, मियां बीवी में

तफ़रीक़ भेदभाव डालता है नफ़रतों के बीज बोता है, बद गुमानियां (दुर्भावना) पैदा करता है, और पूरे समाज को तबाह करके रख देता है।

छुरी का, तीर का, तलवार का तो घाव भरा।।
लगा जो ज़ख़्म ज़बां का, रहा हमेशा हरा।।

हालात के बिगाड़ का बड़ा सबब यही ज़बान है, यह अगर क़ाबू में आ जाये तो हालात संवर जाते हैं, अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है ''ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ रखो और नपी तुली बात कहो, वह तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा क्षमा कर देगा''।

(सूरः अहज़ाब—70—71

एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम दो चीज़ों की ज़मानत ले लो मैं जन्नत की ज़मानत लेता हूँ ''मुँह और शर्म गाह''। ज़ाहिर है कि मुंह में ज़बान ऐसी चीज़ है जो आदमी को हालात के ग़ार (गढ़े) में गिराती है, एक ओर ज़बान का चटखारा उसको हलाल व हराम के फ़र्क़ से रोक देता है और एक इन्सान थोड़े से मज़े के लिए सब कुछ कर गुज़रता है और उससे बढ़ कर उसका ग़लत इस्तेमाल है, बाज़ मरतबा एक छोटा सा जुमला वाक्य आदमी को पाताल में पहुंचा देता है।

हज़रत इब्न अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा की एक रिवायत में आता है कि बाज़ मरतबा आदमी एक अच्छी बात कहता है जो आस्मान की बलन्दियों तक ले जाती है और कभी छोटी सी बात करता है जो उसको तहतस्सरा (पाताल) में गिरा देती है। (सही बुख़ारी)

एक सहाबी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि ''नजात (मोक्ष) का रास्ता क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ''ज़बान को क़ाबू में रखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए काफ़ी हो और अपनी ग़लतियों पर रोओ''।

(सुनन तिर्मिज़ी)

एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ''ख़ामोशी को लाज़िम अनिवार्य पकड़ो, इससे शैतान दूर भागता है''। (तरग़ीब व तरहीब भाग—3 पेज 531)

वास्तविकता यह है कि समाज की बिगाड़ ज़बान का अनुचित प्रयोग का परिणाम है, उसके रूप विभिन्न है, झूट, ग़ीबत पीठ पीछे बुराई, बोहतान, चुग़ल ख़ोरी (परोक्ष निन्दा) अश्लील बातें, यह सब ज़बान के बड़े गुनाह हैं जो एक गुनाह करने वाले के लिए वबाल (मुसीबत) हैं। दूसरी ओर

समाज के लिए किसी नासूर से कम नहीं है।

आज अगर हमारे समाज में हर व्यक्ति अपनी ज़बान खोलते समय इस बात का लिहाज़ करे कि उसकी ज़बान के एक एक बोल पर ख़ुदा के यहां सवाल होगा, और उसको हर हर शब्द का जवाबदेह बनना पड़ेगा तो समाज से ज़बान की तमाम ग़लतियां ख़त्म हो जाएं, मगर बोलते समय इन्सान इसका लिहाज़ नहीं करता। और न ही उसको यह बात याद रहती है।

हर व्यक्ति की ज़बान से निकला हुआ हर शब्द ख़ुदा के यहां सुरक्षित है, उसमें कोई तबदीली नहीं हो सकती, वह क़यामत के दिन उसके सामने पेश किया जाएगा, और उसका अज़ाब उसे भुगतना पड़ेगा।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा ....

4. तीन प्रकार के अज़ाब बयान हुए एक आकाशीय जैसे पत्थर बरसना, आग बरसना, तूफान, दूसरा ज़मीनी जैसे भूकम्प आदि और यह दोनों पिछली उम्मतों पर आए, इस उम्मत को अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ से इस प्रकार के आम अज़ाब से सुरक्षित रखा है, आंशिक रूप से घटनाएं हो सकती हैं, इससे इन्कार नहीं है, हां अज़ाब की तीसरी किस्म इस उम्मत के लिए बाकी रही और वह पार्टी बंदी, लड़ाई–झगड़ा और आपसी रक्तपात का अज़ाब है।

5. यानी यह मेरा काम नहीं कि तुम्हारे झुठलाने पर खुद अज़ाब उतारूँ या उसका कोई निर्धारित समय बताऊँ, मेरा काम सावधान करना है बाकी सब अल्लाह के ज्ञान में है।

6. आपको (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) संबोधित करके पूरी उम्मत को हिदायत दी जा रही है कि ऐसी बुरी मजलिसों से बचें।

8. बस इतनी जिम्मेदारी है कि कहा जाता रहे कि शायद उनमें डर पैदा हो।

9. यह आयत उन मुश्रिकों के जवाब में उतरी जिन्होंने मुसलमानों से इस्लाम को छोड़ने की प्रार्थना की थी, मुसलमानों की शान तो यह है कि वे दूसरों को समझाएं, सीधी राह पर लाने की कोशिश करें उससे वास्तव में यह आशा करना फिजूल है कि वह खुदा के सिवा किसी हस्ती के आगे सिर झुकाए, और अगर कोई ईमान की कमज़ोरी की वजह से ऐसा करता है तो उसका उदाहरण दिया गया है कि जब कोई रेगिस्तान में भटक रहा हो और उसके साथी उसको आवाज़ दे रहे हों फिर भी वह ख़बरदार (चेत) न लाए।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

मज़हब और सदाचरण के बिना मानव दानव बन जाता है

—मौलाना सै0 मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

मजहब सरकशों को सरकशी से (उद्दण्डों को उद्दण्डता से) जालिमों को जुल्म से और मुजरिमों को इरतिकाबे जुर्म से (अपराधियों को अपराध करने से) रोकने की शक्ति रखता है, क्योंकि वह आस्मानी शिक्षाओं पर आधारित होता है, इसमें मानवीय जीवन बिताने तथा दूसरे मनुष्यों के साथ व्यवहार करने के नियम होते हैं, मज़हब मनुष्य में एक ऐसी आंतरिक शक्ति पैदा कर देता है जिस से वह अच्छे बुरे को पहचानने लगता है और अल्लाह के यहां उत्तरदायित्व की कल्पना इतनी दृढ़ हो जाती है कि वह उसकी कल्पना ही से बुराइयों से बचने लगता है मजहब मनुष्य को उसके कर्तव्यों तथा जिम्मेदारियों से सूचित करता है और उसके मन में लोभ तथा हानि का एहसास पैदा करता है और यह भय पैदा करता है कि उसके हर कर्म को तराजू में तौला जा रहा है और कसौटी में परखा जा रहा है और वह उसके लिए उत्तरदायी है उस का यह एहसास बड़ा गहरा और व्यापक होता है जिस का प्रभाव इस सांसारिक जीवन ही तक सीमित नहीं रहता अपितु आखिरत की ज़िन्दगी के लाभ व हानि पर पूरी तरह छाया रहता है मजहबी शिक्षाओं द्वारा ही मनुष्य भले बुरे में अंतर कर पाता है। मजहब ही के द्वारा मनुष्य के मन में प्रेम पारस्परिक लगाव, स्वार्थ, त्याग, सहानुभूति, सन्तोष तथा सद्भावना के जज़्बात अंगडाइयां लेतीं और अल्लाह तआला की ओर से असीमित पुरस्कारों के प्रदान होने की आस बंधाते हैं, मजहब ही के सबब मनुष्य के अन्दर स्वयं अपनी जांच पड़ताल की वह कल्पना पैदा होती है जो उसे जीवन की भूल भुलैयों में भटकने और तामस मन के माया जाल में फंसने से बचाता है, अतएव जब उसे कभी बुरे ख्यालात, शैतानी वसवसे से उस को पाप तथा अपराध पर उभारते हैं तो अपनी जांच पड़ताल की कल्पना लोहे की दीवार बन कर आ खड़ी होती है इसी पर बस नहीं, एकान्त में तथा समाज में यही भावना मनुष्य को बुराई से रोकने और भलाई अपनाने पर उभारती है। यही भावना उसको रात के अंधेरे में जहां उसे बुराई से रोकने वाला कोई नहीं होता वहां उसे बुराई से रोक देती है।

स्वास्थ्य तथा शक्ति, धन तथा समृद्धता की अधिकता मनुष्य के अन्दर लालच तथा सांसारिक लाभों की चाहत पैदा करती हैं धनवानों को उन का धन, घमण्ड तथा उद्दण्डता का शिकार बनाता है, मज़हब से दूरी शक्ति वालों में घमण्ड की भावना उभारती है, ज्ञान

तथा बुद्धि वालों में अहंकार पैदा करती है, अगर मानव शक्ति, धन दौलत ज्ञान तथा बुद्धि को कन्ट्रोल करने तथा संतुलित रखने की कोई शक्ति न हो तो मनुष्य दुर्बलों पर अत्याचार करेगा। माल व दौलत के घमण्ड में मनुष्य निर्धनों का अपमान करता है, अधिक ज्ञान वाला कम ज्ञान वालों को घृणा की दृष्टि से देखता है, यह योग्यताएं दूसरों के अधिकारों का हनन करने का साधन बन जाती हैं यहां मज़हब अपना काम करता है। मज़हब यह एहसास पैदा करता है कि हर योग्यता अल्लाह की प्रदान की हुई है उस योग्यता को अल्लाह के आदेशानुसार काम में लाना चाहिए, मज़हब उन योग्यताओं को शुद्ध मार्ग पर चलाता है वह शक्ति वालों की शक्ति को तथा धनवानों के धन को समाप्त नहीं करता वह उन के अधिकार नियुक्त करता है। उन योग्यताओं के प्रयोग की नियमित रूप से पूरी स्वतंत्रता देता है। मज़हब नहीं चाहता कि सत्ताधारियों तथा धनवानों को इस संसार में नियम रहित पूरी छूट दे दी जाये कि जिस तरह चाहें कमायें और जिस तरह चाहें खर्च करें। मज़हब शक्ति की प्राप्ति और उसके प्रयोग को बे नकेल ऊँट की तरह नहीं छोड़ता कि जिस पर चाहे अत्याचार करें जिस का चाहें अधिकार ले लें और वह पशुओं के समान जीवन बितायें धन एकत्र कर के उससे मजे उड़ाये, वह जंगली भेड़ियों के समान समाज में जैसे चाहें लूट मार करें।

मज़हब का उद्देश्य ही यह होता है कि खुदाई विधान के अनुकूल मानव जीवन के निर्माण तथा जीवन बिताने का एक नियम नियुक्त किया जाये जिसमें मानवीय आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाये, जिसमें मानवीय स्वभाव का ध्यान भी रखा जाये और एक दूसरे के अधिकार भी नियुक्त हों, उसमें अपनी जिम्मेदारियों का पूरा एहसास भी हो और अल्लाह के सामने उत्तरदायित्व का विश्वास भी हो अल्लाह तआला के राजी होने और उसके खुश होने का हर समय ध्यान भी हो तथा पूरा विश्वास हो कि अल्लाह तआला हम को हर समय, हर स्थान पर और हर दशा में देखता है यह वह बातें हैं जो मानवीय जीवन में वैध तथा अवैध की सीमायें निर्धारित करती हैं, और मनुष्य को विनाश के मार्ग से सूचित करके उन से बचाती हैं।

मज़हब का मौलिक दृष्टिकोण ही यह है कि समस्त जगत एक परिवार है। तथा समस्त मानवीय समाज एक परिवार है इस परिवार का हर व्यक्ति एक दूसरे के सहयोग का उत्तरदायी है मज़हब अपने मानने वालों को यह आदेश देता है कि शक्तिवान अपनी शक्ति से, धनवान अपने धन से, ज्ञानी अपने ज्ञान से, निर्बलों, निर्धनों तथा ज्ञान

रहित लोगों की सहायता करें, मज़हब पुरस्कार तथा दण्ड की ऐसी कल्पना पैदा करता है जो मनुष्य को भले कामों की तरफ प्रेरित करता है और बुरे कामों से रोकता है।

जिस समाज में भली भावनाएं तथा प्रशंसा योग्य एहसासात होंगे वह समाज आदर्श समाज होगा उस समाज में एकता होगी, सहानुभूति होगी तथा सद्व्यवहार होगा, उस समाज में न तो किसी के अधिकार का हनन होगा और न ही मतभेद के आधार पर रक्त पात होगा, अगर किसी कारण मतभेद बढ़ता और दूरियां पैदा होती हैं तो उस समाज के भले लोग अपने ज्ञान, अपनी शक्ति तथा अपने धन द्वारा उन दूरियों को शीघ्र ही दूर कर लेते हैं। ऐसे भले समाज के भले लोग हर समस्या का समाधान परस्पर प्रेम द्वारा कर लेते हैं, यदि कोई उद्दण्डता पर उतर आता है तो मज़हब उसके विरुद्ध सीमित दल बल प्रयोग करने की अनुमति देता है, इस अनुमति में भी बुराई को रोकने तथा भलाई का आवाह्न होता है उद्देश्य यह होता है कि समाज में भलाई बढ़े तथा बुराई कम हो। परन्तु जिस समाज से मज़हब निकल जाता है और तमाम भले आचरण समाप्त हो जाते हैं तो वह समाज अपना मुख विनाश की ओर कर लेता है। ऐसे समाज के लोग ना तो मज़हब की परवाह करते ना भले आचरणों और न भेले कामों की बल्कि वहां अवैध कामों को वैध समझा जाने लगता है, परिणाम स्वरूप उस समाज में नवीन समस्याएं जन्म लेती हैं और विभिन्न प्रकार की कठिनाईयां उत्पन्न होती हैं ऐसे गैरमज़हबी समाज में पैदा होने वाली समस्याओं का समाधान निकाला भी जाता है तो वह सामयिक होता है। बल्कि कभी कभी तो वह नई समस्याएं पैदा कर देता है।

इस्लाम के आने से पहले यहां के समाज की लगभग यही दशा थी एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का शत्रु तथा उसके खून का प्यासा बना हुआ था, न किसी का माल सुरक्षित था न किसी की इज़्ज़त तथा आबरू सुरक्षित थी, बल वाले परस्पर लड़ रहे थे, कमज़ोर लोगों की जानें बेगुनाह मारी जा रहीं थीं।

संसार की वर्तमान परिस्थिति की समीक्षा की जाये तो यही परिणाम निकलेगा कि आधुनिक नागरिकता तथा सभ्यता की उच्चता होते हुए भी उसकी दशा जाहलियत काल से कुछ भिन्न नहीं। आज इस्लाम तथा इस्लामिक शिक्षाओं के लागू करने वालों के विरुद्ध जो लड़ाई छेड़ी जा रही है उसके प्रभाव मानव और मानवता के लिए हानिकारक सिद्ध होंगे, इसलिए कि इस्लाम ही वह धर्म है जो आज अपने वास्तविक रूप में सुरक्षित है। तथा उसकी

शिक्षाएं और उसके आदेश पूर्णतः सुरक्षित हैं। भलाई और बुराई में अन्तर बताने के लिए इस्लाम का मापदण्ड आज भी माना हुआ है।

नागरिकता तथा सभ्यता केवल ज्ञान व कला और कुछ विशेष विचारों का नाम नहीं, सभ्यता तथा नागरिकता नाम है एक संतुलित जीवन व्यवस्था तथा व्यापक जीवन दर्शन का जिनका आधार कुछ सिद्धांतों पर होता है। सभ्य तथा असभ्य के बीच यही अंतर है कि सभ्य मनुष्य के पास जीवन बिताने के भले नियम होते हैं जिनके प्रकाश में वह अपना जीवन बिताता है, रहा असभ्य व्यक्ति वह उन जीवन बिताने के भले नियमों से वंचित रहता है वह अपनी इच्छाओं का दास होता है आधुनिक नागरिकता दीन व अख़्लाक़ (धर्म तथा आचरण) से मुक्ति पर आधारित है जिससे मनुष्य में बुरी इच्छाएं तथा अशलीलता की बातें जन्म ले सकती हैं।

इस प्रकार आधुनिक नागरिकता पशुता तथा पशुओं का जीवन धारण कर लेगा, इस नागरिकता को स्वीकार कर लेने वाले और उससे प्रभावित होने वालों का जीवन हिंसक पशुओं, भेड़ियों और जंगली जानवरों से कुछ भी भिन्न न होगा। अर्थात देखने में मानव होगा परन्तु स्वभाव में भेड़िया होगा।

पश्चिमी समाज भले अचारण तथा दीनी नियमों के न होने के कारण फसाद तथा बिगाड़ और अख़्लाक़ी गिरावटों की इन्तिहा को पहुंच चुका है उसकी जीवन व्यवस्था का संतुलन पूर्णतः बिगड़ चुका है वहां के बुद्धिजीवी तथा विचारक जो मानवीय रूप के साथ मनवीय विचार तथा भावनाएं रखते हैं इस का बड़ी शिद्दत के साथ एहसास करने लगे हैं, बड़ी दरिद्रता से आभास करने लगे हैं, यूरोप से प्रकाशित होने वाली पुस्तक ''पश्चिम की मौत ***(The Death of the West)***'' में इस का खुले तौर पर अभिव्यक्ति (इज़्हार) किया गया है। पैटरक ''ज'' बोकनान ***(Patrick-J. Buchanan)*** जैसे फलास्फर ने यह भविष्यवाणी की है कि यूरोप में बहुत जल्द समाज की कल्पना ही समाप्त हो जाएगी पश्चिमी सभ्यता तथा नागरिकता के एक आलोचक का कथन है कि यूरोप में सभ्यता तथा नागरिकता के सुधार के सभी मार्ग बन्द हो चुके हैं, यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं, हर एक इसे जानता है इसलिए यूरोप में रक्तपात, लूट—पाट, अपराध तथा अत्याचार, इज़्ज़त व आबरू के हनन, आत्म हत्या की घटनाएं तथा विभिन्न अपराध का ग्राफ बराबर बढ़ता जा रहा है यह परिस्थिति केवल उन नगरों की नहीं है जहां उन्नति का प्रकाश नहीं पहुंचा अपितु उन उन्नति प्राप्त नगरों जैसे मास्को, न्यूयार्क, वाशिंगटन, लन्दन, बरलिन, पैरिस, इटली, स्पेन और यूनान के अधिकाँश सभ्य नगरों की यही दशा है।

❖❖❖

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आचार-व्यवहार

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

अंतिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी शिक्षा—दीक्षा में स्वयं उदाहरण थे कुछ सहचरों (सहाबा) ने आपकी पत्नी हज़रत आइशा रज़ि0 से निवेदन किया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आचार—व्यवहार बयान कीजिए तो उन्होंने पूछा कि तुम कुर्आन नहीं पढ़ते? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यवहार सम्पूर्ण कुर्आन था। (सीरतुन्नबी)

मेहरबानी और दयाः—

एक बार हज़रत अबू मसऊद अंसारी रज़ि0 अपने गुलाम को पीट रहे थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस अवसर पर वहां आए और दुखी हो कर कहा कि अबू मसऊद! इस दास पर तुम्हें जितना अधिकार है, अल्लाह को तुम पर इससे अधिक अधिकार है। यह सुन कर हज़रत अबू मसऊद रज़ि0 थर्रा उठे और कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल। मैं इस गुलाम को अल्लाह की राह में आज़ाद करता हूँ। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, यदि तुम ऐसा न करते तो दोजख़ की आग तुमको छू लेती। (सीरतुन्नबी)

एक बार एक सहाबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, उनके हाथ में किसी परिन्दे के बच्चे थे और वह चीं—चीं कर रहे थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, ऐ बच्चे कैसे हैं? सहाबी रज़ि0 ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं एक झाड़ी से गुज़रा तो इन बच्चों की आवाज़ आ रही थी तो मैं इनको निकाल लाया, इनकी माँ ने देखा तो बेताब हो कर सर पर चक्कर काटने लगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, तुरन्त जाओ और इन बच्चों को वहीं रख आओ जहां से लाए हो। (सीरतुन्नबी)

क्षमा व दयाः—

हज़रत आइशा रज़ि0 का बयान है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए किसी से कभी बदला नहीं लिया। उहद युद्ध में इस्लाम विरोधियों ने सख़्त वार किया और आपके दांत टूट गए तथा सर में गहरी चोट आ गई एवं आप गश खा कर गिर पड़े। सहाबा ने निवेदन किया कि आप उनके लिए बद्दुआ कीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि मैं लानत करने के लिए नहीं भेजा गया हूँ, अल्लाह ने मुझे लोगों को खुदा की बारगाह में लाने के लिए भेजा है। उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ कि "ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को सत्यमार्ग पर चला, वह मुझे

नहीं जानती''।

(रहमतुल लिल आलमीन)

इस्लाम के शत्रु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके अनुयायियों को सताते रहे, यहां तक कि एक खुदा को मानने वालों की अच्छी—खासी संख्या अपना वतन और घर बार छोड़ने पर विवश हो गयी लेकिन जब मक्का विजय हुआ तो इस्लाम के घोर शत्रु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क्षमा दया पर आधारति थे और आपका एक इशारा इन सबके रक्त को एक क्षण में मिट्टी में मिला सकता था, लेकिन हुआ क्या?

उन सभी कुरैशी सरदारों से जो भय और लज्जा से सर नीचे किये सामने खड़े थे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ? तो उन्होंने दबी ज़बान से उत्तर दिया, ऐ सत्यवान! ऐ अमानतदार! तुम हमारे शरीफ भाई के बेटे हो तथा हमने तुम्हें सदैव नम्र हृदय वाला पाया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, आज मैं तुम से वही कहता हूं जो हज़रत युसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों से कहा था, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा ''तुम पर कोई आरोप नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो''।

(उस्व—ए—रसूले अकरम)

एक बार एक पेड़ के नीचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सो गए, तलवार एक डाल पर लटका दी, ग़ौरस इब्ने हारिस आया और तलवार निकाल कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धृष्टापूर्वक जगाया और बोला, अब तुमको कौन बचाएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा ''अल्लाह''। इतना सुनना था कि वह चक्कर खा कर गिर पड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तलवार उठाई और पूछा अब तुझे कौन बचा सकता है? वह चकित रह गया। आप सल्ल0 ने कहा, जाओ मैं बदला नहीं लिया करता और उसको क्षमा कर दिया। (सीरतुन्नबी)

वीरता, संकल्प और दृढ़ताः—

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 मक्का में रह कर इस्लाम के प्रचार—प्रसार का दायित्व निभा रहे थे और विरोधी शत्रुता का। मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दृढ़ता में कोई कंपन्न नहीं आया और जब विरोधी अपने उद्देश्य में असफल होने लगे तो आप सल्ल0 को सत्ता, सोना—चांदी और सौन्दर्य का लालच दिया लेकिन आप अपने मिशन में लगे रहे तथा दुन्या की ये दौलतें आपके क़दम को न डिगा सकीं। जब आपके चचा अबू तालिब ने भी साथ छोड़ना चाहा तो आपने दृढ़ता और स्थायित्व के जो वाक्य कहे वह संकल्प और स्थिरता के प्रदर्शन का सबसे अंतिम शब्द है कि चचाजान! यदि कुरैश मेरे दाहिने हाथ में सूरज और बायें हाथ में चांद रख दें तब भी सत्य के आह्वान से पीछे न हटूँगा।

सच बोलनाः–

एक बार कुरैश के बड़े–बड़े सरदार चौपाल लगाए बैठे थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात हो रही थी। नज़र बिन हारिस जो कुरैश क़बीले में सबसे अधिक दुन्या देखे हुआ था, ने कहा कि ऐ कुरैश! तुम पर जो मुसीबत आई है, अब तक तुम कोई उपाय न निकाल सके। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारे सामने बच्चे से जवान हुआ, वह तुममें सबसे अधिक प्रिय, बात का सच्चा और बुद्धिमान है, अब जब उसके बालों में सफेदी आ चुकी है और तुम्हारे समक्ष ये धार्मिक बातें रखता है तो तुम कहते हो कि वह जादूगर है, ज्योतिषी और पागल है। ख़ुदा की क़सम! मैंने उसकी बातें सुनीं हैं, उसमें इस प्रकार की कोई बात नहीं है।

(सीरतुन्नबी)।

❖❖❖

मुहर्रमुल–हराम ....

उनको और उनके साथियों को क़त्ल किया बेशक वह सारे मक्तूल शहीद हैं, जन्नत में हैं और उनके क़ातिल ज़ालिम सिज्जीन में अज़ाब भुगत रहे हैं और जहन्नम उनकी प्रतीक्षा में है।

सय्यिदुना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और करबला की दुखद घटना से सम्बन्धित मैंने कुछ चौपाइयाँ कहीं हैं। जो प्रिय पाठकों के अवलोकन हेतु प्रस्तुत है–

सहाबिये रसूल हुसैन, नवा–सए–रसूल हुसैन
चश्मे अ़ली के नूर हुसैन, लख़्ते जिगरे बतूल हुसैन
यज़ीदी लश्कर न झुका सका हुसैन को
मरहबा कहा शहादत को, उम्मत में हैं मक़बूल हुसैन
जाएं यज़ीद के पास हुसैन ने चाहा था
जाएं मक्का या कहीं और हुसैन ने चाहा था
न मानी कोई बात इब्ने ज़ियाद ने उनकी
वरना दब जाए यह फितना हुसैन ने चाहा था।
बड़े शक़ी थे क़त्ल किया जिन्होंने हुसैन को
दोज़ख़ी हो गये जिन्होंने क़त्ल किया हुसैन को
न सोचा हुसैन आल हैं किसकी
कैसे हिम्मत की और क़त्ल किया हुसैन को
शहीद ज़िन्दा हैं अपने रब की जन्नत में
हुसैन ज़िन्दा हैं अपने रब की जन्नत में
न कहो मुर्दा उन्हें ये रब ने है फरमाया
रिज़्क़ पाते हैं रब से अपने रब की जन्नत में
कुरआन कहता है शहीद ज़िन्दा हैं
हदीस कहती है शहीद ज़िन्दा हैं
हम भी कहते हैं शहीद ज़िन्दा हैं
शहीद मुर्दा नहीं शहीद ज़िन्दा हैं
सल्लल्लाहु अ़लन्नबिय्यि व अ़ला आलिही व
अस्हाबिही व शुहदाइही व उम्मतिही व बारक व सल्लम।

मनज़ूम अक़ायद

—इदारा

ख़ुदा एक है दिल से जानो यक़ीं

सिवा उसके मअ़बूद कोई नहीं

हर इक शै पे, हाकिम है, क़ादिर है वह

हर इक जा पे, हाज़िर है नाज़िर है वह

उसी ने किया ख़ल्क़ हर ख़ैर व शर

नहीं फ़ेल बद से वह राज़ी मगर

फ़िरिश्ते हैं नूरानी व बेगुनाह

वह जिबरील लाते थे हुक्मे इलाह

किताबें हैं जितनी ख़ुदा की तमाम

वह सब हक़ हैं उनमें नहीं कुछ कलाम

बुज़ुर्ग और हक़ गरचि हैं अंबिया

मगर सबके सरदार हैं मुस्तफ़ा

मुहम्मद नबी साहिबे मोजिज़ात

अलैहिस्सलामो अलैहिस्सलात

दिया हक़ ने उनको वह कुरआने पाक
कि लारैब फ़ीह जिसकी है शाने पाक
ख़लीफ़ा भी तरतीब से चार हैं
वह हैं पेशवा और सरदार हैं
अबू बक्रो फ़ारूक़, उसमाँ अली
किये हम दमो जानशीने नबी
जो असहाब व औलाद व अज़वाज हैं
वह हैं पेशवा, और सरताज हैं
सवाले नकीरैन हैं गोर में
जियेगा हर एक हश्र के शोर में
लिया जायेगा फिर हिसाबो किताब
बक़दरे अमल है अज़ाबो सवाब
बजा औलिया की करामात हैं
नुजूमी की झूटी हर एक बात है
(सल्लल्लाहु अलन्नबियिय्य व सल्लम)

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب.٩٣/٠، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date 09/09/2018 التاريخ ٢٨/ذی الحجہ ١٤٣٩ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो0 अतहर हुसैन	मौ0 सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक / ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखिये

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

हिजरी सन् के बारह महीनों के नाम इस तरह हैं
ہجری سن کے بارہ مہینوں کے نام اس طرح ہیں۔
मुहर्रम, सफ़र, रबीउल अव्वल, रबीउस्सानी, जुमादल ऊला, जुमादल उख़रा,
محرم،صفر،ربیع الاول،ربیع الثانی،جُمادی الاولیٰ،جُمادی الاخریٰ
रजब, शाबान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ीकअ़दा, जिलहिज्जा
رجب،شعبان،رمضان،شوّال،ذیقعدہ،ذی الحجہ۔
मुहर्रम की पहली तारीख़ को हज़रत उमर रज़ि0 की शहादत हुई थी
محرم کی پہلی تاریخ کو حضرت عمرؓ کی شہادت ہوئی تھی۔
दस मुहर्रम आ़शूरा का दिन कहलाता है
دس محرم عاشوراء کا دن کہلاتا ہے۔
आ़शूरा के दिन रोज़ा रखना सुन्नत है
عاشوراء کے دن روزہ رکھنا سنّت ہے۔
दस मुहर्रम के साथ 9 या 11 का रोज़ा मिलाना मुस्तहब है
دس محرم کے ساتھ ۹ یا ۱۱ کا روزہ ملانا مستحب ہے۔
आशूरा के दिन एक बड़ा ग़मनाक वाक़िआ़ हुआ है
عاشوراء کے دن ایک بڑا غمناک واقعہ ہوا ہے۔
सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ि0 और उनके बहत्तर साथियों को करबला के
سیدُنا حضرت حسینؓ اور ان کے بہتّر ساتھیوں کو کربلا کے
मैदान में शहीद कर दिया गया इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन
میدان میں شہید کردیا گیا۔انّاللّٰہ وانّا الیہ راجعون
वह सब शुहदा जन्नत में हैं और उनके कातिल दोज़खी हैं
وہ سب شہدا جنّت میں ہیں اور ان کے قاتل دوزخی ہیں۔